International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 11, Issue 02, Feb 2024
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

सरदार अजीत सिंह: एक अज्ञात क्रांतिवीर

संजीता[1] डॉ विनय कुमार पाठक[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर

[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर

सार

पगड़ी संभाल ज ा आंदोलन का नेतृत्व सरदार अजीत संह ने कया था। इस आंदोलन का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के कसानों के खलाफ अन्यायपूर्ण कृ ष नीतियों के वरुद्ध आवाज ठाना था। आंदोलन का नाम पगड़ी संभाल ज ा कसानों की पहचान और गरिमा की प्रतीक पगड़ी के प्रति समर्पण को दर्शाता है। सरदार अजीत संह की नेतृत्व क्षमता और संगठन कौशल का परिचय देते हुए, उन्होंने भारतीय कसानों को एकजुट करके ब्रिटिश सरकार के वरुद्ध लड़ाई लड़ने में मदद की। इस आंदोलन ने व भन्न सामाजिक वर्गों और धर्मों के कसानों को एक साथ लाकर एक सशक्त वरोध प्रदर्शन का रूप लया। सरदार अजीत संह के नेतृत्व में आंदोलन का वस्तार हुआ और इसके चलते ब्रिटिश सरकार को कसानों की समस्याओं को गंभीरता से लेने की आवश्यकता पड़ी। इस आंदोलन की वजह से कसानों की आवाज सुनी गई, और बाद में इसका प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता संग्रह में भी महसूस कया गया।

मुख्य शब्द: भारतीय, स्वतंत्रता, आन्दोलन, योगदान, सामाजिक, राजनीतिक।

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में पंजाब के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने योगदान दिया है जिसमें से प्रमुख हैं- करतार संह सराभा, ऊधम संह, भगत संह, सुखदेव, लाला लाजपत राय, राजकुमारी अमृत कौर, प्रताप संह कैरों, सोहन संह भकना, इन्द्र वद्यावाचस्पति, जगतराम,

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भाई परमानन्द, गुरुबख्श ढिल्लो, मदन लाल ढींगरा, गुरदयाल संह ढिल्लों, पं डत कांशीराम, राम संह, गोकुलचन्द नारंग, हरि कशन सरहदी, बलवंत संह आदि। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक लंबा चलने वाला आंदोलन था जिसने हजारों लोगों की जान ली और अन गनत ब लदान दिए। **15** अगस्त, **1947** को अंततः स्वतंत्रता प्राप्त करने से पहले कई दशकों तक बड़ी और छोटी दोनों घटनाएं, त्रासदी, अ भयान और आंदोलन हुए। शहीद-ए-आजम भगत संह के चाचा और ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने वाले पंजाब के आरम्भिक वप्ल वयों में से एक सरदार अजीत संह का जन्म पंजाब के जालंधर जिले के बंगा थाने के एक छोटे से गाँव खटकरकलां में **23** फरवरी **1881** को सरदार अर्जन संह के द् वतीय पुत्र के रूप में हुआ था। सरदार अजीत संह की पत्नी का नाम हरनाम कौर था। भगत संह के पता कशन संह उनके बड़े भाई थे। छोटे भाई थे स्वर्ण संह जो **23** साल की ही उम्र में स्वाधीनता संग्राम के दौरान जेल में मले तपेदिक रोग से गुजर गए थे। तीनों के पता अर्जन संह उन दिनों आजादी संग्राम की वाहक कांग्रेस पार्टी से जुड़े हुए थे और तीनों भाई भी उसी से जुड़े। तीनों भाइयों ने साईं दास एंग्लो संस्कृत स्कूल जालंधर से मैट्रिक की परीक्षा पास की और अजीत संह ने **1903-04** में बरेली कालेज से कानून की पढ़ाई की, **1903** में ही उनका ववाह कसूर के सूफी वचारों वाले धनपत राय की पो षत पुत्री हरनाम कौर से हुआ।

पगड़ी संभाल ज ा आंदोलन यह अंग्रेज सरकार के खलाफ कसानों का आन्दोलन था। अंग्रेज सरकार साल **1900** से **1907** में तीन कृ ष कानून लेकर आई थी, जिसका सम्पूर्ण पंजाब के कसानों ने वरोध कया था। सबसे ज्यादा वरोध पंजाब में दिखाई दिया था। सरदार अजीत संह ने आगे बढ़कर इस आंदोलन का नेतृत्व कया। इस आन्दोलन से अंग्रेज सरकार इतना डर गई क उन्हें तीनों कानूनों को वापस लेने के लए मजबूर होना पड़ा। दरअसल यह कसान आंदोलन अंग्रेजों के तीन कानूनों के खलाफ था। इन कानूनों के नाम थे पंजाब भू म अलगाव अ धनियम **1900** पंजाब भू म उपनिवेश अ धनियम **1906** और बारी दोआब नहर अ धनियम **1907**। इन कानूनों का मकसद कसानों की जमीनों को हड़पकर बड़े साहुकारों के हाथ में देना था। इन कानूनों के कारण कसान अपनी जमीन से ना पेड़ काट सकते थे और ना ही उस जमीन पर घर या झोपड़ी बना सकते थे। ऐसे में इन कानूनों के खलाफ साल **1907** में लायलपुर (वर्तमान में पा कस्तान में) में कसानों ने आन्दोलन शुरू कर दिया। इस आंदोलन का नेतृत्व सरदार अजीत संह कर रहे थे। आन्दोलन की इस आग में घी डालने का काम कया

अंग्रेजों के भू-राजस्व और जल कर में बढ़ोतरी के फैसले ने धीरे-धीरे यह आंदोलन पूरे देश में फैल गया। पगड़ी संभाल ज ा आंदोलन से अंग्रेजी हुकूमत बुरी तरह से डर गई थी। इसके कई कारण थे। सबसे पहले तो आंदोलनकारियों ने आन्दोलन के लए जान-बुझकर लायलपुर का चयन कया। इसका कारण यह था क पंजाब का यह हिस्सा उस समय सबसे वक सत था और यहाँ पर बड़ी संख्या में सेना से रिटायर अ धकारी और सैनिक रहते थे। ऐसे में अंग्रेजों को डर था क वद्रोह की यह आग सेना के अंदर भी भड़क सकती है। इसके अलावा अंग्रेजो को पता था क यह क्षेत्र सेना और पु लस में भर्ती का गढ़ है।

कसानों का आन्दोलन बड़ा अद्भुत आन्दोलन था। गांव-गांव, घर-घर से आवाज निकलने लगी थी- "पगड़ी संभाल ज ा" इन्कलाब जिन्दाबाद और भारत माता की जय के नारों से सारा पंजाब गूंज उठा था। गोरी सरकार की दृष्टि पहले से ही अजीत संह पर थी। उन्होंने भारत माता सोसायटी स्था पत करके अपने को गोरी सरकार को अ खों का कांटा बना लया था। अतः कसानों के आन्दोलनों ने जोर पकड़ा तो **1907** को **10** मई को अजीत संह को बन्दी बनाकर देश में बाहर मांडले भेज दिया। उनके साथ ही लाला लाजपतराय जी को भी गरफ्तार करके देश से निर्वा सत कर दिया गया था। अजीत संह कुछ महीनों तक तक मांडले की जेल में रहे। जेल में उन्हें बड़े-बड़े कष्ट भोगने पड़े, बड़ी-बड़ी यंत्रणाएं सहनी पड़ीं, कन्तु वे वच लत नहीं हुए। भारत में जब उनके निर्वासन के वरुद्ध आवाज उठाई गई, और बड़े-बड़े नेता उनके तथा लाला लाजपतराय जी को छोड़ने की मांग करने लगे, तो वे और लालाजी- दोनों नेता छोड़ दिये गये।

अजीत संह ने मांडले से लौट कर पुनः स्वतंत्रता के लए कार्य करना प्रारंभ कया पर सरकारी गुप्तचर उनके पीछे लगे रहते थे। उनका चलना- फरना, उनका कसी से मलना-जुलना कठिन हो गया था। उन्होंने अनुभव कया क अब वे भारत में रहकर भारत की स्वतंत्रता के लए कोई कार्य नहीं कर सकते। अतः वे गुप्त रूप से सूफी अम्बाप्रसाद के साथ ईरान चले गये। अजीत संह कुछ वर्षों तक ईरान में रहे। **1914** ई० में जब का प्रथम वश्व युद्ध आरंभ हुआ, तो वे ईरान से तु र्कस्तान चले गये और तु र्कस्तान से ब र्लन गये। उन्होंने लाला हरदयालजी के साथ मलकर ब र्लन में भी स्वतंत्रता के लए कार्य कये। ब र्लन से वे स्पेन, ब्राजील और द क्षण अमेरिका गये। द क्षण अमेरिका में भी उन्होंने कई ऐसे कार्य कये, जो बड़े साह सक और देश-भक्तिपूर्ण थे।

1932 में अजीत संह द क्षण अमेरिका से इटली गये। उन्होंने इटली रे डयो से भारतवा सयों को सलाह दी क उन्हें इस समय स्वतंत्रता के लए वद्रोह कर देना चाहिए। उन दिनों नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जापान में थे, आजाद हिन्द फौज के संगठन में लगे हुए थे। अजीत संह जी ने उनसे मलकर कई योजनाएं बनाई थीं। द् वतीय महायुद्ध में जब अंग्रेज वजयी हुए और इटली पर अंग्रेजों का अ धकार हो गया, तो अजीत संह बन्दी बना लये गये। वे कई वर्षों तक अंग्रेजों के बन्दी रहे। वह अपना शेष जीवन व्यतीत करके भारत की म ी की शय्या पर सदा के लए सो जाना चाहते थे कन्तु बीच में ही उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, वे स्वास्थ्य के सुधार के उद्देश्य से डलहौजी चले गये। डलहौजी में ही उनकी अमर आत्मा **15** अगस्त **1947** को जब भारत स्वतंत्र हुआ उनके शरीर के पंजरे से निकल गई।

अजीत संह के बारे में कभी श्री बाल गंगाधर तिलक ने कहा था ये स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बनने योग्य हैं। जब तिलक ने ये कहा था तब सरदार अजीत संह की उम्र केवल **25** वर्ष थी। **1909** में सरदार अपना घर बार छोड़ कर देश सेवा के लए वदेश यात्रा पर निकल चुके थे, उस समय उनकी उम्र **27** वर्ष की थी। ईरान के रास्ते तुर्की, जर्मनी, ब्राजील, स्विट्जरलैंड, इटली, जापान आदि देशों में रहकर उन्होंने क्रांति का बीज बोया और आजाद हिन्द फौज की स्थापना में योगदान दिया। अजीत संह ने भारत और वदेशों में होने वाली क्रांतिकारी गति व धयों में पूर्ण रूप से सहयोग दिया। उन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन को चुनौती दी तथा भारत के औपनिवे शक शासन की आलोचना की और खुलकर वरोध भी कया। अजीत संह पर सया, रोम तथा द क्षणी अफ्रीका में रहे तथा सन **1947** को भारत वा पस लौट आए। भारत लौटने पर पत्नी ने पहचान के लए कई सवाल पूछे, जिनका सही जवाब मलने के बाद भी उनकी पत्नी को वश्वास नहीं हुआ। अजीत संह इतनी भाषाओं के ज्ञानी हो चुके थे क उन्हें पहचानना बहुत ही मुश्किल था।

सरदार अजीत संह पगड़ी संभाल ज ा आंदोलन के नायक थे। "पगड़ी संभाल ज ा" आंदोलन, कसानों से परे, सेना को घेरने के लए फैल चुका था। **1907** में, लाला लाजपत राय के साथ बर्मा में मंडाले जेल को निर्वा सत कया गया था। उनकी रिहाई के बाद, वे ईरान से भाग गए, जो सरदार अजीत संह और सूफी अम्बा प्रसाद की अगुवाई वाले समूहों द्वारा क्रांतिकारी गति व धयों के केंद्र के रूप में तेजी से वक सत हुए, जिन्होंने **1909** से वहां काम

कया था। **1910** तक, इन समूहों की गति व धयों और उनके प्रकाशन, हयात, ब्रिटिश खु फया द्वारा देखा गया था **1910** के आरंभ में रिपोर्टों ने तुर्की और फारस को एकजुट करने और ब्रिटिश भारत को धमकी देने के लए अफगानिस्तान जाने के लए जर्मन प्रयासों का संकेत दिया। हालां क, **1911** में अजीत संह की प्रस्थान ने भारतीय क्रांतिकारी गति व धयों को पीसने के लए रोक दिया, जब क फारस के ब्रिटिश प्रतिनि धयों ने देश में जो कुछ भी गति व ध बनी थी, उन पर सफलतापूर्वक प्रतिबंध लगा दिया। वहां से, उन्होंने रोम, जिनेवा, पेरिस और रियो डी जनेरियो की यात्रा की। **1918** में, वह सैन फ्रां सस्को में गदर पार्टी के निकट संपर्क में आया था। **1939** में, वे यूरोप लौट आए और बाद में नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इटली में अपने मशन में मदद की। **1946** में, वह पं डत जवाहर लाल नेहरू के निमंत्रण पर भारत लौट आए। दिल्ली में कुछ समय बिताने के बाद, वह डलहौजी गए। **15** अगस्त **1947** को उन्होंने अपनी आ खरी श्वास लीय इस तारीख को भारत को आजादी मली उनके अंतिम शब्द थे, ष्भगवान का शुक्र है, मेरा मशन पूरा हो गया है।

निष्कर्ष

पगड़ी संभाल ज ा आंदोलन ने भारतीय कसानों की एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। इस आंदोलन की कहानी भारत के इतिहास में एक प्रेरणादायक परिचय देती है। सरदार अजीत संह की नेतृत्व में आंदोलन के कारण कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए। इस आंदोलन के फलस्वरूप, ब्रिटिश सरकार को कसानों की बढ़ती समस्याओं को समझने और उस पर काम करने की आवश्यकता महसूस हुई। इसके अलावा, आंदोलन ने भारतीय कसानों को उनके हक के लए एकजुट होकर संघर्ष करने के लए प्रेरित कया। इस आंदोलन का एक और प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर भी पड़ा। यह आंदोलन ने व भन्न क्षेत्रों, जातियों और धर्मों के लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में एकजुट होकर साझा मंच पर लड़ने के लए प्रेरित कया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गंडा संह, संस्करण, पंजाब में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड। चतुर्थ (लाजपत राय और सरदार अजीत संह का निर्वासन)। पटियाला, **1978**

2. प्रदमन संह और जो गंदर संह धानकी, संस्करण, बनश्एड अलाइव। चंडीगढ़, **1984**

3. मोहन, कमलेश, म लटैंट नेशन लज्म इन पंजाब **1919-1935** दिल्ली, **1985**

4. पुरी, हरीश के., गदर आंदोलन अमृतसर, **1983**

5. देओल, गुरदेव संह, शहीद अजीत संह। पटियाला, **1973**

6. जगजीत संह, गदर परती लहर। दिल्ली, **1979**

7. अरोड़ा, अ वनाश चंदर। आधुनिक भारतीय इतिहास। **25**वां जालंधर प्रदीप प्रकाशन, **2013**

8. बैरियर, एन जेराल्ड। **1907** की पंजाब गड़बड़ीरू कृ ष अशांति के लए भारत में ब्रिटिश सरकार की प्रति क्रया। आधुनिक ए शयाई अध्ययन **.1.4.(2008)**रू **353-383**

9. डा र्लंग, मैल्कम। समृ द्ध और कर्ज में पंजाब का कसान। चैथा न्यूयॉर्कर ऑक्सफोर्ड यूनिव र्सटी प्रेस, **1947**।

10. देओल, जी.एस. राष्ट्रीय आंदोलन में गदर पार्टी की भू मका। दिल्ली स्ट र्लंग प्रकाशक, **1969**।